**1** करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है लोक जनशक्ति पार्टी ने। इसमें 50 लाख सदस्य बिहार से बनाए जाएंगे। इसी महीने पार्टी का सदस्यता अभियान शुरू होगा, जो आगामी 30 जनवरी तक चलेगा।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 3 दिसंबर 2019

# 'घुसपैठियों को 2024 से पहले देश से बाहर कर देंगे'

**चुनावी रण** ▸ गृह मंत्री अमित शाह का राहुल गांधी पर निशाना, कहा-जब मर्जी हो शासन काल की तुलना कर लें

## महिलाओं को नौकरियों में तीस फीसद आरक्षण का वादा, ओबीसी आरक्षण के लिए बनेगी कमेटी

**जेएनएन, जमशेदपुर**

केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने यहां चुनावी सभाओं में कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। कहा कि राहुल बाबा, जो बोलना हो बोलो, पर अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं और भाजपा सरकार पूरे देश में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) लागू करेगी। 2024 के चुनाव में वोट मांगने आने से पहले सरकार पूरे देश से घुसपैठियों को चुन-चुन कर बाहर निकालेगी।

शाह सोमवार को पश्चिमी सिंहभूम के चक्रधरपुर और पूर्वी सिंहभूम के बहरागोड़ा में चुनावी सभाओं को संबोधित कर रहे थे। चक्रधरपुर में उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को सीधी चुनौती दी। कहा-राहुल बाबा, जब मर्जी हो, अपने शासनकाल का हिसाब-किताब लेकर मैदान में आ जाओ। आपके 55 साल के कामकाज पर भाजपा के पांच साल का काम भारी है, चाहे वह केंद्र सरकार की बात हो या झारखंड की। शाह ने पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के लिए कमेटी गठित करने की घोषणा की। साथ ही, महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30 फीसद आरक्षण देने की बात कही।

झारखंड के चक्रधरपुर में सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने चुनावी रैली को संबोधित किया। जागरण

**महासमर** झारखंड विधानसभा चुनाव 2019

चक्रधरपुर में रेलवे हाई स्कूल मैदान में उन्होंने कहा कि भाजपा सिर्फ विकास के काम करती है। हमारा एक लक्ष्य है, भ्रष्टाचार मुक्त शासन। मोदी जी सुशासन के लिए अब देश-दुनिया में जाने जाते हैं। शाह ने विधानसभा चुनाव में प्रचंड बहुमत देने का आश्वासन लोगों से लिया और भारत माता की जय के नारे लगाए। इससे पहले उन्होंने आदिवासी नायकों को नमन कर अपने भाषण की शुरुआत की।

पाकिस्तान की चर्चा करते हुए उन्होंने सर्जिकल और एयर स्ट्राइक को मोदी सरकार का साहसिक कदम बताया। लोगों ने पूछा कि राम मंदिर बनना चाहिए या नहीं। लोगों ने हां किया तो शाह ने कहा कि कांग्रेस ने मंदिर निर्माण की राह में रोड़ा अटका रखा था। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद अब अयोध्या में रामलला का भव्य मंदिर बनेगा। ये हमारा संकल्प है। उन्होंने भाजपा सरकार की उपलब्धिां गिनाते हुए लोगों से एक बार फिर झारखंड में भाजपा की डबल इंजन की सरकार बनाने की अपील की।

## देश में मोदी नहीं, अंबानी-अडानी की सरकार : राहुल गांधी

**प्रदीप सिंह, सिमडेगा**

झारखंड की अपनी पहली चुनावी सभा में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा की नीतियों पर जमकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नहीं, बल्कि अंबानी और अडानी की सरकार चल रही है। मोदी गरीबों के पैसे लेकर अपने 15-20 उद्योगपति मित्रों को देते हैं। इन उद्योगपतियों का लाखों करोड़ों रुपये का उन्होंने कर्ज माफ किया है। मोदी ने गरीबों के पैसे छीनकर, विजय माल्या, अनिल अंबानी, मेहुल चौकसे जैसे चोरों की जेबें भरीं।

सोमवार को विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण की सीटों के लिए प्रचार अभियान का आगाज करते हुए कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने सिमडेगा में मतदाताओं को लुभाने की भरपूर कोशिश की। वादा किया कि झारखंड में गठबंधन की सरकार आएगी तो छत्तीसगढ़ की तर्ज पर किसानों का कर्ज माफ होगा। आदिवासियों को लुभाने के लिए 'जल, जंगल, जमीन पर पूरा अधिकार'... का नारा उछाला। कहा, भाजपा की सरकार अपने उद्योगपति मित्रों को आदिवासियों और गरीबों का जमीन छीनकर देती है। अगर झारखंड में सरकार बनी तो उद्योगपतियों की जमीन लेकर फिर से आदिवासियों और गरीबों को दिया जाएगा। इस बाबत छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार का भी उदाहरण दिया।

झारखंड के सिमडेगा में सोमवार को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी चुनावी रैली को संबोधित करते हुए। जागरण

राहुल बोले, जहां भी कांग्रेस की सरकार आई है किसानों का कर्ज माफ हुआ है। आदिवासियों की जमीन की रक्षा हुई है। छत्तीसगढ़ में टाटा कंपनी से जमीन लेकर किसानों को वापस किया गया है। यही काम झारखंड में दोहराया जाएगा।

## दूसरे दौर की चुनौती है मुश्किल

**राज्य ब्यूरो, रांची**

झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे दौर की चुनौतियां जरा भिन्न हैं। इस चरण में जिन 20 विधानसभा सीटों के लिए सात दिसंबर को वोट डाले जाने हैं, उनमें न तो भाजपा को कम आंका जा सकता है और न संप्रग गठबंधन को कमजोर। वजह भी स्पष्ट है, पिछले चुनावों का परिणाम इस ओर साफ इशारा करता है कि कोई किसी से कम नहीं रहा है। यही वजह है कि दोनों ही खेमों ने इस बार अपनी पूरी ताकत दूसरे चरण के चुनाव में लगाई है। भाजपा ने जहां टॉप लीडर्स की टोली लगाई है, वहीं संप्रग के क्षेत्रीय क्षत्रपों ने अपनी पूरी ताकत झोंक रखी हैं।

2014 के विधानसभा चुनाव और 2019 के लोकसभा चुनाव के विधानसभावार जो परिणाम आए हैं, वे यह साफ बताते हैं कि दोनों ही खेमों का पलड़ा बराबर का रहा है। 2014 के विधानसभा चुनाव में कोल्हान और दक्षिणी छोटानागपुर की जिन 20 सीटों के लिए चुनाव हुआ था, उनमें भाजपा और झामुमो दोनों ने आठ-आठ विधानसभा क्षेत्रों में जीत हासिल की थी। भाजपा की तत्कालीन सहयोगी आजसू को दो और झापा एवं मधु कोड़ा की जय भारत समानता पार्टी को एक-एक सीट हासिल हुई थी। इस चुनाव में भाजपा नौ पर और झामुमो पांच सीटों पर दूसरे स्थान पर थी। आजसू इस बार भाजपा के साथ नहीं है, तो मधु कोड़ा की पार्टी का विलय कांग्रेस में हो चुका है। बात 2019 के लोकसभा चुनाव की करें, तो यहां भी हर मोर्चे पर भाजपा और संप्रग बराबर खड़े नजर आते हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव का यदि विधाननसभावार आकलन करें तो भाजपा और कांग्रेस दोनों ने ही 10-10 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त बनाई थी।

**2014** के विधानसभा चुनावों में भाजपा और झामुमो में बराबरी का रहा था मुकाबला

| विधानसभा क्षेत्र | विधानसभा 2014 | लोकसभा 2019 |
|---|---|---|
| बहरागोड़ा | झामुमो | भाजपा |
| घाटशिला | भाजपा | भाजपा |
| पोटका | भाजपा | भाजपा |
| जुगसलाई | आजसू | भाजपा |
| जमशेदपुर पूर्वी | भाजपा | भाजपा |
| जमशेदपुर प. | भाजपा | भाजपा |
| सरायकेला | झामुमो | भाजपा |
| चाईबासा | झामुमो | कांग्रेस |
| मझगांव | झामुमो | कांग्रेस |
| जगन्नाथपुर | जभासपा | कांग्रेस |
| मनोहरपुर | झामुमो | कांग्रेस |
| चक्रधरपुर | झामुमा | कांग्रेस |
| खरसावां | झामुमो | भाजपा |
| तमाड़ | आजसू | भाजपा |
| तोरपा | झामुमो | कांग्रेस |
| खूंटी | भाजपा | कांग्रेस |
| मांडर | भाजपा | भाजपा |
| सिसई | भाजपा | कांग्रेस |
| सिमडेगा | भाजपा | कांग्रेस |
| कोलेबिरा | झापा | कांग्रेस |

लोस चुनाव में भाजपा ने 12 सीटें हासिल की, लेकिन चाईबासा सीट वह कांग्रेस से हार गई।

# भाजपा ने सरयू राय समेत तमाम बागियों को किया निष्कासित

**राज्य ब्यूरो, रांची**

झारखंड में भाजपा ने सरयू राय समेत तमाम बागियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया है। पार्टी ने ऐसे सभी नेताओं को पार्टी से निष्कासित कर दिया है, जो पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। सोमवार को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मण गिलुवा ने किसी के नाम का उल्लेख किए बगैर इस बाबत निर्देश जारी किया।

जारी निर्देश में भाजपा की ओर से कहा गया है कि भाजपा झारखंड प्रदेश के वैसे नेता, जो विधानसभा चुनाव में पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ चुनाव मैदान में हैं या प्रत्याशी का सार्वजनिक विरोध कर रहे हैं, अथवा संगठन के निर्देश के विपरीत कार्य करते हुए अनुशासन तोड़ रहे हैं, ऐसे सभी नेता पार्टी से स्वतः निष्कासित माने जाएंगे। दरअसल, चुनाव में भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ चुनाव लड़ने वालों और अधिकृत प्रत्याशी का सार्वजनिक तौर पर विरोध करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसे में अनुशासनात्मक कार्रवाई के माध्यम से पार्टी ऐसे लोगों को कड़ा संदेश देना चाहती है। व्यक्ति विशेष के नाम का उल्लेख न कर यह भी जाहिर करना चाहती है कि भाजपा उन्हें कोई अहमियत नहीं दे रही है।

बता दें कि सरयू राय समेत करीब दर्जन भर भाजपा नेता पार्टी छोड़कर चुनाव मैदान में हैं। भाजपा के स्तर से अब तक इनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया गया था। हालांकि, इतने विलंब से अपनाई गई निष्कासन की इस प्रक्रिया को महज औपचारिकता ही बताया जा रहा है। बता दें कि विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अपने 13 विधायकों के टिकट काटे थे।

### ये हैं चुनाव मैदान में

सरयू राय मुख्यमंत्री रघुवर दास के खिलाफ जमशेदपुर पूर्व से चुनाव मैदान में हैं। पार्टी प्रवक्ता प्रवीण प्रभाकर ने तो दो दिन पूर्व ही भाजपा छोड़ एनपीपी का दामन थाम लिया है। वह नाला से चुनाव लड़ेंगे। बरकट्ठा से अमित यादव भी भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी जानकी यादव के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। बहरागोड़ा से समीर मोहंती, बोरियो से ताला मरांडी, कोडरमा से शालिनी गुप्ता, गोमिया से माधव लाल सिंह, बरही से उमाशंकर अकेला, सिंदरी से फूलचंद मंडल जैसे तमाम नेता हैं, जो पार्टी छोड़ भाजपा के अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। इस कड़ी में राधाकृष्ण किशोर और वैद्यनाथ राम का नाम भी शामिल है, जिनके निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है।

## चौथे चरण में नामांकन वापसी के बाद 221 प्रत्याशी चुनाव मैदान में

**राज्य ब्यूरो, रांची** : झारखंड में चौथे चरण के चुनाव की 15 सीटों पर हुए नामांकन तथा स्क्रूटनी के बाद आठ उम्मीदवारों ने अपने नामांकन वापस ले लिए। इसके बाद इन सीटों पर कुल 221 प्रत्याशी चुनाव मैदान में रह गए हैं। इस चरण में नामांकन वापसी के अंतिम दिन सोमवार को बगोदर तथा सिंदरी से एक-एक, गांडेय, बाघमारा तथा चंदनकियारी से दो-दो उम्मीदवारों ने अपने नामांकन वापस लिए। अन्य सीटों पर कोई नामांकन पत्र वापस नहीं हुआ। बता दें कि नामांकन दाखिल करने वाले उम्मीदवारों में 51 के पर्चे रद हो गए थे। नामांकन वापसी के बाद मधुपुर में 13, देवघर में 12, बगोदर में 12, जमुआ में 14, गांडेय में 12, गिरिडीह में 12, डुमरी में 15, बोकारो में 25, चंदनकियारी में 15, सिंदरी में 16, निरसा में 08, धनबाद में 22, झरिया में 17, टुंडी में 13 तथा बाघमारा में 15 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। सबसे अधिक 25 उम्मीदवार बोकारो में हैं, जबकि सबसे कम आठ उम्मीदवार निरसा में हैं। बोकारो, सिंदरी, धनबाद तथा झरिया में मतदान के लिए दो-दो बैलेट यूनिटें (ईवीएम) लगानी पड़ेंगी।

# अनंत हेगड़े के बयान पर सियासत गर्म, भाजपा लाल

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली**

- भाजपा सांसद ने कहा था, केंद्र के 40 हजार करोड़ लौटाने के लिए फड़नवीस बने थे तीन दिन के सीएम
- सियासी हंगामे के बाद फड़नवीस ने कहा- दावा झूठा, एक भी पैसा केंद्र सरकार को वापस नहीं किया

पूर्व केंद्रीय मंत्री और कर्नाटक से भाजपा सांसद अनंत हेगड़े ने दावा किया है कि महाराष्ट्र को केंद्र सरकार से मिले 40 हजार करोड़ रुपये लौटाने के लिए ही देवेंद्र फड़नवीस तीन दिन के लिए मुख्यमंत्री बने थे। उनका यह बयान सामने आते ही सियासत गर्म हो गई और भाजपा नेतृत्व ने भी बयान पर नाखुशी व्यक्त की। इसके बाद फड़नवीस ने स्पष्टीकरण जारी कर हेगड़े के दावे को झूठा करार दिया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र से एक भी पैसा केंद्र सरकार को वापस नहीं किया गया है।

उत्तर कन्नड़ जिले के येल्लापुर में उपचुनाव के लिए आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए अनंत हेगड़े ने शनिवार को कहा था, 'आप सभी जानते हैं कि हाल में सिर्फ 80 घंटे के लिए हमारा व्यक्ति मुख्यमंत्री था, लेकिन जल्द ही फड़नवीस ने इस्तीफा दे दिया था। हमें यह ड्रामा क्यों करना पड़ा? क्या हमें पता नहीं था कि हमारे पास बहुमत नहीं है, वह मुख्यमंत्री क्यों बने? यह ऐसा प्रश्न है तो हर कोई पूछता है। 40 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा मुख्यमंत्री के नियंत्रण में थे। राकांपा, कांग्रेस और शिवसेना के सत्ता में आने पर इन 40 हजार करोड़ का इस्तेमाल विकास कार्यों के लिए नहीं किया जाता और अन्य चीजों (दुरुपयोग) में चला जाता।' उन्होंने आगे कहा, 'इसीलिए व्यवस्था की गई और शपथ (फड़नवीस ने) ली गई। शपथ लेने के 15 घंटे के भीतर फड़नवीस ने सुनिश्चित किया कि यह (धनराशि) वहां पहुंचे जहां उसे होना चाहिए और उसे सुरक्षित किया। पूरी धनराशि केंद्र सरकार को लौटा दी गई...' उनके इस बयान ने सोमवार को हंगामा मचा दिया। राकांपा प्रवक्ता नवाब मलिक ने कहा, 'राज्य सरकार के लिए 40 हजार करोड़ रुपये केंद्र को लौटाना असंभव है। अगर यह सच है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ेगा। यह सिर्फ महाराष्ट्र के साथ अन्याय नहीं है बल्कि अन्य राज्यों के साथ भी है। तमिलनाडु, बंगाल, ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और केरल जैसे राज्य इसे सहन नहीं करेंगे।'

पूर्व केंद्रीय मंत्री और कर्नाटक से भाजपा सांसद अनंत हेगड़े (फाइल फोटो)। प्रेट्र

**हेगड़े के बयान से भाजपा नेतृत्व खफा** : हेगड़े के बयान पर भाजपा नेतृत्व ने भी गहरी नाखुशी व्यक्त की। एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने बताया कि शीर्ष नेतृत्व की यह भावना हेगड़े तक पहुंचा दी जाएगी। इसके बाद नागपुर में फड़नवीस ने हेगड़े के दावे का खंडन करते हुए कहा, मैं इस दावे को सिरे से नकारता हूं। ऐसी कोई भी घटना नहीं घटी है। बुलेट ट्रेन परियोजना केंद्र सरकार के अंतर्गत बनी एक कंपनी द्वारा चलाई जा रही है। उसमें महाराष्ट्र सरकार का काम सिर्फ भूमि अधिग्रहण का है। उसमें महाराष्ट्र सरकार द्वारा पैसे देने का कोई सवाल ही नहीं उठता। फड़नवीस के अनुसार, बुलेट ट्रेन हो या कोई और परियोजना, उसके लिए न तो महाराष्ट्र सरकार ने केंद्र से कभी कोई पैसा मांगा और न ही केंद्र ने कोई पैसा दिया। तो उसे लौटाने का प्रश्न ही नहीं उठता। फड़नवीस ने कहा कि मुख्यमंत्री या कार्यवाहक मुख्यमंत्री रहते उनके द्वारा इस तरह का कोई बड़ा नीतिगत निर्णय नहीं लिया गया। जो भी व्यक्ति केंद्र या राज्य की अकाउंटिंग व्यवस्था को समझता है, वह जान सकता है कि केंद्र और राज्य के बीच पैसों का लेन-देन इस प्रकार नहीं किया जाता। वित्त विभाग चाहे तो इस तथ्य की जांच करके जनता के सामने सही तथ्य उजागर कर सकता है। फड़नवीस ने कहा कि इस प्रकार के बयान देना और ऐसे गलत बयानों पर प्रतिक्रिया देना दोनों ही गलत हैं।

मालूम हो कि पिछले पखवाड़े महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने राकांपा विधायक दल के तत्कालीन नेता अजीत पवार के समर्थन से भाजपा सरकार बनाने का प्रयास किया था। 23 नवंबर को सुबह आठ बजे उन्होंने राजभवन में मुख्यमंत्री पद और अजीत पवार ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। लेकिन तीन दिन में ही अजीत पवार समर्थक विधायकों द्वारा उनका साथ न देने से खेल पलट गया और अजीत पवार को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था। उसके दो घंटे बाद ही फड़नवीस ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

### फड़नवीस का कथित कृत्य महाराष्ट्र के लोगों के साथ धोखा

शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा कि फड़नवीस का कथित कृत्य महाराष्ट्र के लोगों के साथ धोखा है। फड़नवीस और महाराष्ट्र भाजपा को 'अपराधी' बताते हुए उन्होंने कहा कि राज्य के मुख्य सचिव इस मसले पर स्पष्टीकरण देंगे। कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने प्रधानमंत्री से जवाब की मांग करते हुए ट्वीट किया, 'पूर्व केंद्रीय मंत्री के बयान ने भाजपा का महाराष्ट्र विरोधी चेहरा उजागर कर दिया है। क्या संघीय ढांचे को कुचल दिया गया है। क्या लोगों और किसानों के कल्याण के लिए रखे 40 हजार करोड़ रुपये साजिशन वापस ले लिए गए हैं?'

# जेल से ही राजद की कप्तानी संभालेंगे लालू

**राज्य ब्यूरो, पटना**

- लगातार 11वीं बार बनेंगे राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष

पार्टी की स्थापना के 22 साल के इतिहास में लालू प्रसाद यादव का लगातार 11वीं बार राष्ट्रीय जनता दल (राजद) का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना तय माना जा रहा है। अंतर सिर्फ यह होगा कि इस बार वह रांची जेल से ही पार्टी की कमान संभालने की प्रक्रिया पूरी करने वाले हैं। राजद में ऐसा पहली बार होने जा रहा है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का कोई प्रत्याशी जेल से ही नामांकन करेगा और निर्वाचन का सारा विधान भी पूरा करेगा। बता दें कि लालू प्रसाद यादव 23 दिसंबर 2017 से जेल में हैं।

ताजपोशी की तैयारी पूरी कर ली गई है। मंगलवार को पटना स्थित राजद कार्यालय में लालू का हस्ताक्षर किया हुआ नामांकन पत्र भरा जाएगा। प्रस्तावकों के नाम तय कर लिए गए हैं। मौके पर लालू खुद मौजूद नहीं रहेंगे। उनके बदले करीबी विधायक भोला यादव नामांकन की औपचारिकता पूरी कर सकते हैं।

लालू यादव फाइल

पांच जून, 1997 में राजद के गठन के समय से ही राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए हर बार लालू प्रसाद को ही निर्विरोध चुना जाता रहा है। अभी तक किसी भी चुनाव में लालू के सामने किसी अन्य दावेदार ने पर्चा तक नहीं भरा है। इस बार भी सिर्फ एक ही नामांकन पत्र भरा जाएगा, जो लालू प्रसाद का होगा। उसी दिन शाम तक स्क्रूटनी कर ली जाएगी। उन्हें नाम वापसी का भी मौका मिलेगा और यह भी तय है कि लालू मैदान से हटने वाले नहीं हैं। इस तरह 10 दिसंबर को राष्ट्रीय सहायक निर्वाचन पदाधिकारी चितरंजन गगन को राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर लालू के नाम की ही घोषणा करनी पड़ेगी। हालांकि 10 दिसंबर को राष्ट्रीय परिषद के अधिवेशन से पहले लालू की नई पारी की विधिवत घोषणा की जाएगी।

**क्या है नियम** : जेल से पार्टी का चुनाव लड़ने की प्रक्रिया भी वही होगी, जो आम चुनावों में होती है। जेल प्रशासन से अनुमति लेकर प्रत्याशी अपना नामांकन कर सकता है। इसी विधान के तहत लोकसभा चुनाव में लालू प्रसाद ने अपने दल के प्रत्याशियों को सिंबल दिया था। अब खुद भी उसी नियम का फायदा उठाएंगे। रांची सेंट्रल जेल के अधीक्षक का अग्रसारित किया हुआ नामांकन फॉर्म पटना पहुंच चुका है। लालू का कोई करीबी उसे जमा करके प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकता है।

### उद्धव को दिया था भरोसा, दबा दूंगा विद्रोह

▸ प्रथम पेज का शेष

इस घटनाक्रम पर शरद पवार ने कहा, 'जब मुझे अजीत के समर्थन (फड़नवीस को) की जानकारी मिली तो उद्धव ठाकरे से संपर्क करने वाला मैं पहला व्यक्ति था। मैंने उनसे कहा कि जो हुआ अच्छा नहीं हुआ और उन्हें आश्वस्त किया कि मैं इसे (विद्रोह को) दबा दूंगा। जब राकांपा में सभी को पता चला कि अजीत की कार्रवाई को मेरा समर्थन नहीं है तो जो पांच-दस उनके साथ थे उन पर दबाव बन गया।' राकांपा प्रमुख ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि परिवार में किसी ने अजीत पवार से बात की थी या नहीं, लेकिन परिवार में सभी को लगता था कि अजीत ने गलत किया। बाद में मैंने उनसे कहा कि उन्होंने जो किया वह माफी योग्य नहीं है। कोई भी ऐसा करता तो उसे उसके परिणाम भुगतने पड़ते और आप भी अपवाद नहीं हैं। लेकिन साथ ही राकांपा में ऐसा एक बड़ा वर्ग है जिसकी उनमें आस्था है... क्योंकि वह काम पूरा करते हैं।

# शिवसेना का दावा, भाजपा खेमे में लगाएंगे सेंध

**सामना में कामना**

- कहा, 185 सीटों तक बहुमत बढ़ने की संभावना, भाजपा का मौजूदा समर्थन भी उसके साथ नहीं रहेगा
- मुखपत्र में कहा, उम्मीद है कि फड़नवीस ने बतौर मुख्यमंत्री जो गलतियां कीं उसे दोहराएंगे नहीं

**मुंबई, एजेंसियां** : उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में महाविकास अघाड़ी सरकार के 169 मतों के समर्थन से विश्वास मत जीतने के बाद शिवसेना ने कहा कि भविष्य में अगर उनके बहुमत का आंकड़ा 185 पहुंच जाए तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' में कहा गया है कि 170 सीटों का बहुमत कोई सामान्य बात नहीं है। कल को यह आंकड़ा 185 तक पहुंच सकता है। संपादकीय में दावा किया गया है कि लोगों ने भाजपा से दूरी बना ली है। शिवसेना ने कहा, 'भाजपा के पास जो मौजूदा समर्थन है, वह संभवतः पार्टी के साथ नहीं रहेगा। पार्टी के साथ जो कुछ भी हो रहा है वह उसके पूर्व के कर्मों का नतीजा है।'

प्रदेश भाजपा विधायक दल के नेता फड़नवीस को रविवार को विधानसभा में विपक्ष का नेता घोषित किया गया। इस पर शिवसेना ने कहा, 'फड़नवीस को इस बात को याद रखना चाहिए कि इतिहास में उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा, जिसने हर किसी को अंधेरे में रख कर और बहुमत के बिना अवैध तरीके से शपथ ली थी।'

शिवसेना ने सामना में संपादकीय के जरिये उम्मीद जताई कि महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता के तौर पर देवेंद्र फड़नवीस उन गलतियों को नहीं दोहराएंगे जो उन्होंने राज्य का मुख्यमंत्री रहते हुए की थीं।

### विपक्ष के नेता की गरिमा बरकरार रखें फड़नवीस

पार्टी ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा कि वह उस पद पर महज '80 घंटों' के लिए रहे। संपादकीय में कहा गया कि अगर वह अपनी इस छवि से बाहर निकलना चाहते हैं तो उन्हें नेता प्रतिपक्ष के तौर पर नियमानुसार काम करना होगा और भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं विधायक दल के पूर्व नेता एकनाथ खडसे से ट्यूशन लेनी चाहिए। संपादकीय में कहा गया, 'फड़नवीस को विपक्ष के नेता की गरिमा बरकरार रखनी चाहिए और उन गलतियों को नहीं दोहराना चाहिए जो उन्होंने महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री रहते हुए की थीं।' उल्लेखनीय है कि एक गठबंधन के तौर पर चुनाव लड़ने वाली भाजपा और शिवसेना ने अलग-अलग क्रमश : 105 और 56 सीटें जीतें थीं और सत्तारूढ़ गठबंधन को स्पष्ट बहुमत भी हासिल हुआ था, लेकिन चुनाव के बाद मुख्यमंत्री पद की दावेदारी को लेकर शिवसेना और भाजपा एक साथ आगे नहीं बढ़ पाईं और गठबंधन टूट गया। इसके बाद शिवसेना ने पाला बदलकर राकांपा और कांग्रेस के साथ गठबंधन की सरकार बनाई है।

# बुलेट ट्रेन समेत कई बड़ी परियोजनाओं पर उद्धव सरकार की नजर टेढ़ी

**ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई**

- राज्य में जारी सभी परियोजनाओं की समीक्षा के दिए आदेश
- बुलेट ट्रेन परियोजना पर शिवसेना और मनसे शुरू से उठा रही हैं सवाल

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने राज्य में जारी सभी परियोजनाओं की समीक्षा के आदेश दिए हैं। इनमें मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना भी शामिल है। राज्य के वो किसान और आदिवासी इस परियोजना का विरोध कर रहे हैं जिनकी जमीन अधिग्रहीत की जानी है। इस फैसले से माना जा रहा है कि निकट भविष्य में आरे कॉलोनी में बन रहे मेट्रो कारशेड की तर्ज पर ऐसी कई परियोजनाएं रोकी जा सकती हैं जिन पर भाजपा-शिवसेना में मतभेद रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चहेती बुलेट ट्रेन परियोजना पर शिवसेना और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना दोनों ही शुरू से सवाल उठाती रही हैं। उनकी विशेष आपत्ति इसके मुंबई और अहमदाबाद के बीच में चलने को लेकर रही है। हालांकि बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए अध्ययन कांग्रेस की मनमोहन सरकार ने शुरू किया था। मोदी सरकार ने इसे अमली जामा पहनाना शुरू किया। लेकिन अब यदि उद्धव सरकार ने इसमें अड़ंगा लगाया तो सरकार में शामिल कांग्रेस भी उसका साथ दे सकती है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस का कहना है कि इस परियोजना में राज्य सरकार की भूमिका महाराष्ट्र के हिस्से में बनने वाले बुलेट ट्रेन रूट के लिए भूमि अधिग्रहण तक ही सीमित है। लेकिन भाजपा को सबक सिखाने के लिए शिवसेना उसमें भी बाधा डाल सकती है। एक राकांपा नेता ने सरकार बनने के पहले ही संकेत दिए थे कि सरकार बनी तो इसमें लगने वाले राज्य सरकार के हिस्से की राशि किसानों की संपूर्ण कर्ज माफी के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। हालांकि रविवार देर रात उद्धव ने कहा, 'यह सामान्य आदमी की सरकार है। जैसा कि अभी आपने पूछा, हां हम बुलेट ट्रेन (परियोजना) की समीक्षा करेंगे। क्या मैंने आरे कारशेड की तरह बुलेट ट्रेन परियोजना पर रोक लगाई है। नहीं, मैंने नहीं लगाई।'

महाराष्ट्र में बुलेट ट्रेन परियोजना का किसान कर रहे हैं विरोध। प्रतीकात्मक

दरअसल, आरे कॉलोनी में करीब 2,100 पेड़ काटकर वहां मेट्रो कारशेड बनाने को लेकर शिवसेना पहले से विरोध में थी। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले हाई कोर्ट का फैसला आते ही शुरू हुई इन पेड़ों की कटाई पर शिवसेना ने तीव्र विरोध दर्ज कराया था। उस समय उसने वादा किया था कि उसकी सरकार बनी तो यह परियोजना रोक दी जाएगी। हालांकि शिवसेना-भाजपा मिलकर चुनाव लड़ रहे थे तो भाजपा को कल्पना भी नहीं थी कि शिवसेना अलग होकर सरकार बनाएगी। लेकिन चुनाव के करीब 38 दिन बाद बनी शिवसेना-कांग्रेस-राकांपा सरकार में पहला निर्णय इस परियोजना को रोकने का ही किया गया। हालांकि जितने पेड़ कटने आवश्यक थे, वे काटे जा चुके हैं और उससे कई गुना ज्यादा मुंबई मेट्रो कारपोरेशन द्वारा रोपित भी किए जा चुके हैं। पेड़ों की यह कटाई हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की अनुमति के बाद हुई है। अब इस परियोजना को रोके जाने का कोई लाभ नहीं होना। उलटे परियोजना की लागत ही बढ़नी है।

सोमवार को ही मुंबई के भाजपा विधायक अतुल भातखलकर ने शिवसेना पर विकास विरोधी होने का आरोप लगाते हुए ऐसी और भी परियोजनाओं में अड़ंगा डाले जाने की आशंका व्यक्त की। इन्हीं में दो और परियोजनाएं मुंबई-नागपुर समृद्धि कॉरीडोर और कोंकण के नाणार में प्रस्तावित ग्रीन फील्ड रिफाइनरी परियोजना शामिल हैं। 46,000 करोड़ रुपयों की समृद्धि कॉरीडोर परियोजना को लेकर शिवसेना का शुरू में विरोध था, लेकिन फड़नवीस की पिछली सरकार में महाराष्ट्र स्टेट रोड डेवलपमेंट कारपोरेशन के मंत्री शिवसेना कोटे के एकनाथ शिंदे ही थे। इसलिए बाद में शिवसेना इस मुद्दे पर शांत हो गई थी। देखना है कि अब वह इस परियोजना को रोकती है या चलने देती है। ग्रीन फील्ड रिफाइनरी को लेकर तो शिवसेना का विरोध बहुत प्रबल रहा है। बुलेट ट्रेन की भांति ही यह परियोजना भी विदेशी सहयोग से चलनी है। इसके विरोध में कोंकण के शिवसैनिक शुरू से आंदोलन करते रहे हैं। कई शिवसैनिकों पर आंदोलन के कारण आपराधिक मामले दर्ज किए गए थे। सोमवार को उद्धव सरकार ने आरे के आंदोलनकारियों की भांति ही नाणार के आंदोलनकारियों पर से भी ये सभी मामले वापस ले लिए। इस परियोजना का भविष्य भी उद्धव सरकार में उच्चवल नजर नहीं आता।

# पंकजा मुंडे ने अब ट्विटर प्रोफाइल से भाजपा हटाया

**औरंगाबाद, प्रेट्र** : फेसबुक पोस्ट के जरिये रविवार को 'भावी यात्रा' का एलान कर चुकीं भाजपा नेता व महाराष्ट्र की पूर्व मंत्री पंकजा मुंडे ने सोमवार को अपनी ट्विटर प्रोफाइल के बायो से 'भाजपा' समेत अन्य जानकारियां हटा लीं। इसके साथ ही पंकजा के पार्टी छोड़ने की अटकलों ने जोर पकड़ लिया।

उधर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष चंद्रकांत पाटिल ने मीडिया की अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि पंकजा पार्टी नहीं छोड़ रही हैं। उन्होंने कहा, 'भाजपा नेता पंकजा मुंडे के संपर्क में हैं। हालिया विधानसभा चुनाव में मिली हार को लेकर वह आत्ममंथन कर रही हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वह पार्टी छोड़ रही हैं।' पाटिल ने शिवसेना नेता संजय राउत के उस बयान को भी खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि कई नेता उनकी पार्टी में शामिल होना चाहते हैं।

उन्होंने कहा, 'महाराष्ट्र